

क्या है निर्सकल्प अवस्था?

!! बीते हुए वृत्तों के बारे में निर्सकल्पता

निर्सकल्पता का गुण धारण करने का एक भावार्थ तो यह है कि कर्म करने के बाद उसका जो परिणाम निकलता है उसके विषय में मनुष्य को अधिक संकल्प नहीं चलाने चाहिए। उसे किसी वृत्तों या घटना का बारंबार चिंतन नहीं करना चाहिए।

मान लीजिए कि एक मनुष्य बस से जा रहा है, वहाँ भीड़ में किसी ने उसकी जेब काट ली। बाद में जेब को सम्भालने पर उसे मालूम हुआ कि कोई उसकी जेब काट गया है। अब यदि वह व्यक्ति व्यथित हो उठता है, स्वयं को कोसता है, दूसरों से झगड़ता है और इस प्रकार सोचता है कि - 'आज तो मैं घर से बाहर ही न जाता तो ठीक होता! मैं कितना दुर्भाग्यशाली हूँ कि मेरे ही साथ यह दुर्घटना घटी! पता नहीं कौन सी मुसीबत मुझे इस बस में ले आई! मैंने आज अपनी जेब में इतने पैसे डाले ही क्यों! क्या जेब कतरे को इतने सब आदमियों में मेरे सिवा कोई दिखाई ही नहीं दिया!' इस प्रकार का चिंतन करने वाले मनुष्य को 'निर्सकल्प' नहीं कहेंगे, बल्कि उसे चंचल स्वभाव वाला अथवा विक्षिप्त चित्त वाला मानेंगे। इसकी बजाय यदि अब जेब कतरे को पकड़ने का कोई उपाय हो सकता हो तो ठीक, वरना मनुष्य को यह सोचकर तुरंत ही शांत हो जाना चाहिए कि 'जो होना था सो हो गया, अब आगे के लिए मैं सावधानी रखूँगा।' ऐसे ही मनुष्य को हम 'निर्सकल्प' मानेंगे।

!! भविष्य के बारे में फालतू संकल्प न करना ही निर्सकल्पता है

निर्सकल्पता का दूसरा भाव यह है कि मनुष्य कर्म करते हुए भविष्य के लिए फालतू और अयोग्य चिंतन न करे। उदाहरण के तौर पर वह यह न सोचे कि - 'हाय, अब मैं जिस कार्य के लिए जा रहा हूँ, पता नहीं वह होगा या नहीं होगा? अमुक व्यक्ति मेरी बात मानेगा या नहीं मानेगा? यदि वह नहीं मानेगा तो मेरा जाना ही व्यर्थ हो जायेगा।' परिणाम से पहले ही इस प्रकार के संकल्प करना गोया स्वयं को असमंजस या दुविधा में डालना है और स्वयं को निर्बल बनाना और निराशा का गड्ढा खोदकर उसमें कूद जाना है। इसकी बजाय तो जो व्यक्ति किसी शुभ कार्य को अपना कर्तव्य समझकर उसे करने लग जाता है और अनागत अथवा

भविष्य का व्यर्थ चिंतन नहीं करता अथवा स्वयं ही अपने सामने हौआ लाकर स्वयं को नहीं डराता, वही निर्सकल्प है। वह मनुष्य असफलता में भी दुःखी नहीं होता क्योंकि वह तो कर्म को अविनाशी जानकर अथवा अपने कर्तव्य को मीठा मानकर श्रेष्ठ समझता है और उसे करने में खुशी मानता है।

!! अवकाश के समय स्वरूपनिष्ठ होना ही निर्सकल्पता है

जब मनुष्य कार्य व्यवहार से अवकाश प्राप्त करे तो कछुए की तरह कर्मन्द्रियों को समेटकर, सांसारिक और व्यवहारिक संकल्पों को छोड़कर स्वरूपनिष्ठ हो जाये। इस बात को सभी लोग मानते हैं कि अहम् 'आत्मा' का मूल स्वरूप तो है ही निर्सकल्पता। जब आत्मा मुक्ति की अवस्था में होती है तो निर्सकल्प और शांत ही होती है। फिर जब आत्मा मुक्तिधाम से उतरकर इस कर्मक्षेत्र पर आती है और शरीर का



क्या कर्म करते हुए हम निर्सकल्प रह सकते हैं? अगर हम निर्सकल्प हैं तो कर्म कैसे हो सकता है? निर्सकल्प किसे कहते हैं? क्योंकि आज हम जो भी कर्म करते हैं, उसमें हमारे बहुत संकल्प चलते हैं, और अपने आप ही चल जाते हैं, हम चाहते नहीं हैं फिर भी वही रिपीट होते रहते हैं। वृत्त में चलते रहते हैं। तो हम निर्सकल्प कैसे रह सकते हैं, आज हम इसके बारे में जानते हैं। निर्सकल्पता का अर्थ जड़ वस्तु की भाँति संकल्प-शून्य या अचेतन होना नहीं है, बल्कि निर्सकल्पता के पाँच मुख्य जीवनोपयोगी अर्थ हैं। जिन्हें अपनाने से मनुष्य कर्म करते हुए भी योगी जीवन का आनंद पाता है। वे पाँच बातें हैं...

आधार लेती है तब वह पहले केवल शुद्ध ही संकल्प उत्पन्न करती है। अतः अब जबकि पहले मुक्तिधाम में लौटना हमारा लक्ष्य है तो हमें निराकारी, निर्विकारी और निर्सकल्प अवस्था में स्थित होने का अभ्यास करना चाहिए। जब हम निराकारी, निर्विकारी और निर्सकल्प परमपिता परमात्मा की स्मृति में पुरुषार्थ के लिए बैठते हैं तो उस समय उसे इधर-उधर के या आगे-पीछे के संकल्प नहीं करने चाहिए। उदाहरण

के रूप में, कल दुकान पर जाकर मैं अमुक धंधा करूँगा अथवा दफ्तर में जाकर अमुक फाइल देखूँगा अथवा अमुक व्यक्ति मुझसे ठीक व्यवहार नहीं करता आदि आदि। जबकि हमारा मूल स्वरूप ही है निर्सकल्प और निराकारी तथा निस्संग। और उसमें ही टिकने का कार्य अभी हम कर रहे हैं। तो साकारी अथवा शरीर सम्बंधी संकल्प अब उत्पन्न नहीं होने चाहिए। बल्कि सांसारिक संकल्पों से निवृत्त, निर्सकल्प, बस ज्योति स्वरूप परमात्मा की स्मृति में टिक जाना चाहिए।

!! कर्म करते परमाथ चिंतन, ज्ञान-मंथन या ईश्वरीय स्मृति ही निर्सकल्पता है

निर्सकल्पता के बारे में हमने ऊपर भी बात कही, एक तो यह कि कर्म करने के बाद जब परिणाम सामने आता है तो उस समय निर्सकल्प अवस्था या सहज समाधि वाले मनुष्य के क्या लक्षण होते हैं, दूसरे यह कि कर्म प्रारंभ करते समय निर्सकल्पता का गुण धारण

करने का क्या भाव है, तीसरा यह कि जब कर्म से हम फारिग हैं, तो निर्सकल्पता की पराकाष्ठा में अथवा निर्सकल्प समाधि में स्थित होने का क्या अर्थ है? अब हमें स्पष्ट करना है कि जब कोई मनुष्य ऐसा कार्य कर रहा हो जिसमें उसकी बुद्धि को पूरी तरह लगाने की आवश्यकता न हो तो उस कर्म को करते हुए भी अन्यान्य सांसारिक संकल्पों को उत्पन्न न करके ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव-सम्बंध - शेष पेज 8 पर...

परेशानियों के वक्त रहें स्थिर



डॉ. कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आज इलाज इतने सारे हो गये, दवाइयाँ इतनी सारी हो गईं, लेकिन बीमारियाँ फिर भी बढ़ती गईं। परेशानी बढ़ती गई। क्योंकि परेशानी बाँड़ी में नहीं है, परेशानी वास्तव में कहाँ पर आई हुई है? आजकल बहुत लोग एक सुंदर लाइन कहते हैं, कहते हैं कि आजकल रिश्ते कितने कॉम्प्लीकेटेड हो गए हैं, पहले रिश्ते इज़ी हुआ करते थे। लेकिन रिश्ते कॉम्प्लीकेटेड हो गए हैं या...। गाँठें रिश्तों में नहीं आती हैं, गाँठें कहाँ आ जाती हैं? आत्मा में आ जाती हैं। गाँठें शरीर में बाद में बनती हैं, पहले आत्मा में बनती हैं। अगर आत्मा से गाँठ खुल जाये तो शरीर से गाँठ खोलना इज़ी हो जायेगा। अगर डॉक्टर ने शरीर से गाँठ खोली और हमने मन से गाँठ नहीं खोली तो फिर डॉक्टर ये भी कह देते हैं कि ध्यान रखना नहीं तो चार-पाँच साल बाद हम फिर मिलेंगे। तो हमें उनसे पूछना चाहिए कि डॉक्टर साहब, आपने निकाल दिया मेरा ब्लॉक, आपने निकाल दिया मेरा ब्लॉक, तो हमें फिर क्यों मिलना है! क्योंकि डॉक्टर साहब उस ब्लॉक को सिर्फ शरीर से ही निकाल सकते हैं, और हमने उस ब्लॉक को बहुत समय से अपने अन्दर में पकड़ के रखा हुआ है। और जो भी चीज़ हमने अपने अन्दर पकड़ के रखी हुई है, उसका असर हमारे शरीर पर पड़ रहा है। सोच उनके बारे में रहे थे, शरीर हमारा बीमार हो रहा है। तो जब भी ऐसे वाली सोच चले, तो अपने आपकी प्यार से काउंसलिंग करनी चाहिए कि उनकी वजह से मुझे अपना नुकसान नहीं करना। जीवन में बड़ी-बड़ी बातें कभी-कभी आती हैं, संस्कार बड़ी-बड़ी बातों में नहीं बनता है। संस्कार उसमें बनता है जो चीज़ हम रोज़ करते हैं। जीवन में छोटी-छोटी बातें रोज़ आती हैं। कुछ बातें ऐसी हैं जो फिक्स्ड हैं, रोज़ आती हैं। जैसे रोड पर ट्रैफिक रोज़ मिलता है, जिस रोड पर गड्ढा है वो रोज़ मिल रहा है एक साल से। लेकिन हर बार हम गाड़ी या स्कूटर लेकर उस रोड पर जाते हैं, तो एक थॉट क्रियेट कर देते हैं उस गड्ढे के लिए। कैसी सड़क है, कैसी सरकार है, क्या करें, कुछ करते नहीं। पाँच-दस थॉट तो ऐसे ही वेस्ट हो जाते हैं। और रोज़ ये हो रहा है। हमें सोचने की ज़रूरत है कि हमारी रोज़

कि तनी एन जी 1 वेस्ट हो रही है उस सड़क, उस ट्रैफिक के बारे में, किसी ने एक हॉर्न एक्स्ट्रा बजा दिया इसके लिए। हमने सोचा कि ये नॉर्मल है, गड्ढे हैं तो हम सोचेंगे ही ना। तो वो गड्ढे पहले सड़क पर थे, अब कहाँ हैं? सड़क के गड्ढे तो कोई और ठीक करता, लेकिन उसको देख-देख कर हमने गड्ढे कहाँ कर लिये? अपने मन में कर लिये। सबसे पहले सारे दिन की वो बातें देखें जो रोज़ आती हैं और हमें पता है कि कल फिर आयेंगी। जैसे घर में एक सदस्य को आदत होती है घर में हर एक चीज़ अच्छे से रखने की, इतनी सफाई जैसे लगता है कि इस घर में कोई रहता ही नहीं है। और फैमिली के दूसरे मेम्बर को आदत होती है कुछ यहाँ रखेंगे, कुछ वहाँ रखेंगे, कुछ यहाँ फेंका, कुछ वहाँ फेंका। अब ये दोनों इकट्ठे बीस-पच्चीस साल से रहे हैं। लेकिन दोनों पच्चीस साल से हर रोज़ प्यार से थोड़ा बहस कर ही लेते हैं। सबसे पहले आज ज़रूरी है कि जो रोज़ की बातें हैं, उसके लिए हम तैयार ही हैं। वो एक ऐसा एग्जाम जिसमें क्वेश्चन क्या होंगे ये आपको पहले से ही पता है। जो क्वेश्चन पहले से ही पता है उसमें क्यों फेल होना! पता है कल भी सामान ठीक से नहीं रखा था, पता है आज भी नहीं रखा है और पता है कि शायद कल भी नहीं रखेंगे। जितनी मेहनत हम बोलने और सोचने में करते हैं, उससे कम मेहनत लगती है उस चीज़ को उठाकर सही जगह पर रखने में। लेकिन अगर आप उनसे पूछो कि आप तो रोज़-रोज़ इतनी मेहनत करते हो वो टॉपिक डिस्कस करने में, इससे तो अच्छा आप सामान उठाकर जगह पर रख दो। तो कहते हैं कि वो तो हम रख सकते हैं, इतना काम करते हैं तो एक चीज़ उठाकर नहीं रख सकते क्या! लेकिन हम बोलेंगे नहीं तो उनको कौन सुधारेगा? हमारा इंटरेशन बहुत अच्छा है, परिवार है हमारा, बच्चे हैं हमारे, तो हमें उनको सुधारना है। लेकिन कई बार उनको सुधारने की कोशिश में हमारे अपने मन की स्थिति बिगड़ती जाती है। एनजी वेस्ट वेस्ट वेस्ट। - क्रमशः



असम-रूपनगर। गवर्नमेंट बनीकांता कॉलेज ऑफ़ टीचर्स एजुकेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर 'हाउ टू मॅटेन पीस ऑफ़ माइंड इन दिस दिस एरा ऑफ़ अनरस्ट' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र. कु. रेखा। साथ है ब्र. कु. निर्मल तथा बी.एड. कॉलेज की प्रिन्सिपल डॉ. मौसमी बोरदोलई।



जयपुर-राजापार्क। स्नेह पब्लिक स्कूल, मुहाना में 'हाउ टू फोकस ऑन स्टडी' सेमिनार में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र. कु. पूजा बहन को 'गेस्ट ऑफ़ ऑनर' सम्मान से सम्मानित करते हुए स्कूल की प्रिन्सिपल अनुपमा माहेश्वरी।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र. कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 3075 10
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkiivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।